Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-16, Issue-3, December-2022
www.researchguru.net

सामाजिक समरसता में सूफी संतों का योगदान

DR PRAVEEN PATHAK
Assistant professor, (Guest Faculty) History *Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh,* *praveenpthak@gmail.com*

सारांश

मुख्य शब्द- सूफी आंदोलन, चिश्ती, सुहरावर्दी, नक़्शबंदी, फिरदौसी, कादरी

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में सूफी आंदोलन का उल्लेख न हो यह संभव नहीं है। भारतीय इतिहास में जीतने आंदोलन हुए उन सब आंदोलन में सूफी आदोलन ने अपनी एक विशिष्ट छाप छोड़ी है। सूफी आंदोलन को मात्र एक आंदोलन के नज़रिए से मुल्यांकन करना सही नहीं होगा क्योंकि सूफी आंदोलन सिर्फ एक आंदोलन नहीं बल्कि भारतीय समाज में फैली हुई कटुतता, घृणा, नफ़रत को दूर करने का प्रयास किया। हिंदू और मुस्लिमों के बीच चली आ रही नफरत की आग को ठंडा करने का प्रयास किया। सूफीवाद नवीं सदी के आस-पास आकर लेना शुरू किया लेकिन भारत में सूफी आंदोलन की शुरुआत 11वीं शताब्दी के आस-पास हो चुकी थी। जिस समय मुस्लिम शासक भारत में अपनी सत्ता को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। जब हिंदू और मुस्लिम के बीच नफरत की दीवार दिन-पर दिन चौड़ी होती जा रही थी उसी समय सूफी आंदोलन एक उल्का की भांति, भारत की भूमि पर चमक उठा। सूफीवाद इस्लाम के रहस्यवादी दर्शन पर आधारित है सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने अनुसार किया। सूफी संत उलेमा के खिलाफ होते थे। सूफी रहस्यवाद में विश्वास करते थे। अधिकांश सूफी सार्वजनिक जीवन में धन के प्रदर्शन का विरोध किया। सूफियों ने लोकतान्त्रिक एवं स्वतंत्रत विचारों पर बल दिया। वें धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध थे। सूफी संत भक्ति संतों की भांति 'ईश्वर के प्रेम पर बल देते थे कुछ समय बाद सूफी अलग-अलग संप्रदायों में विभाजीत हो गये सभी सूफी संप्रदायों के अपने-अपने एक पीर या गुरु होते थे। प्रत्येक पीर अपने संप्रदाय को अपने हिसाब से संचालित करता था इस कार्य के लिए उनके पास शिष्यों की बड़ी संख्या होती थी जो अपने पीर के प्रति समर्पित होते थे तथा उन्हीं के आदेशनुसार कार्य करते थे। एक बात हम लोगों को ध्यान देनी चाहिए कि सूफी संतों और उनके द्वारा स्थापित संप्रदायों का एक अलग धर्म की स्थापना में कोई विश्वास नहीं था। वह एक अल्लाह की भक्ति में विश्वास करते थे।

उद्देश्य – भारतीय इतिहास में सूफी आंदोलन के योगदान और भूमिका पर प्रकाश डालना हैं।

प्रस्तावना

सूफी शब्द की उत्पत्ति: सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है लेकिन हम इतिहासकारों के प्रमुख मतों का अध्ययन कर के सूफी शब्द की उत्पत्ति के बारे में जान सकते है सूफ़ी शब्द अरबी शब्द 'सूफ़' (ऊन) से बना हुआ है जो एक प्रकार से ऊनी वस्त्र प्रतीक है जिसको सूफी लोग पहना करते थे। सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सफा' से भी मानी जाती है सफा का अर्थ पवित्रता से है एक और मत प्रचलित है कि जो सूफी संत हजरत मुहम्मद साहब द्वारा मदीना में निर्मित मस्जिद के बाहर 'मक्का की पहाड़ी' पर लोगों ने शरण लिया और अपने को खुदा की अराधना में लीन कर लिया। इसलिए वे सूफी कहलाये।

भारत में सूफी आंदोलन

भारत में सूफियों का आगमन 11वीं से लेकर 12 वीं शताब्दी मान सकते है। भारत में आगमन के समय सूफियों के ख़ानक़ाह कुछ ही स्थानों पर होते

थे जैसे पंजाब और मुल्तान। लेकिन धीरे-धीरे सूफीमत का विस्तार बिहार, बंगाल, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, आदि प्रदेशों तक फैल गया। इन्हीं स्थानों पर कई सूफियों में प्रसिद्ध ख़ानक़ाह बने हुए है। सूफियों के विचार ने भारतीय जन-मानस पर गहरा प्रभाव डाला। भारतीय समाज में सूफियों को आदर और उच्च सम्मान प्राप्त था। अबुल फजल ने अपनी पुस्तक में 'आईने –इ-अकबरी में सिर्फ 14 सूफी सिलसिलों का वर्णन किया है। यह सिलसिले दो भागों में बटे हुए है। पहला **बेशरा** और दूसरा है **बाशरा।** बेशरा के अंतगर्त कलंदर, फिरदौसी, सिलसिला आते है जो शरियत के नियमों के नहीं मानते है जबकि दूसरा सिलसिला बाशरा है इसके अंतगर्त ***चिश्ती, सुहरावर्दी, फिरदौसी, कादरी व नक़्शबंदी*** आते है। ये इस्लामी कानून को मानते है। इब्न-अल-अराबी ने फुहात-ए –मक्किया में वहदत-उल-वजूद का सिद्धांत प्रतिपादित किया। वहदत-उल-वजूदव के सिद्धांत को शेख अलाउद्दीन सिम्मानी ने आलोचना की। वहदत-उल-वजूद के सिद्धांत के स्थान पर उन्होंने वहदत-उल-शुहुद का उल्लेख किया। इसके अनुसार अल्लाह व सृष्टि के बीच अंतर होता है न कि समायोजन। भारत प्रथम इस्लामी रहस्यवादी पुस्तक कश्फ-उल-महजूब' है इस पुस्तक से यह जानकारी प्राप्त होती है कि कैसे उपमहाद्वीप के बाहर की परम्पराओं ने भारत में सूफी चिंतन को किस तरह प्रभावित किया। भारत में कुछ प्रमुख सूफी संप्रदाय हुये जिन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी जैसे कि ***चिश्ती, सुहरावदी, फिरदौसी, शत्तारी, कादिरी, नक्शबन्दी*** है। सूफी संतो में प्रमुख रूप से ***बाबा फरीद, ख्वाजा मु इनुद्दीन चिश्ती, ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, शेख हमीददीन नागौरी, शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर ,नासिरूद्दीन चिराग-ए-दिल्ली, शेख निज़ामुद्दीन औलिया, गेसू दराज, नसूरुद्दीन महमूद, शिहबुद्दीन सुहारवारदी, शेख हुसैनी, शेख बहाउद्दीन जकरिया, जलालुद्दीन तबरीजी, हामिदउड्डीन नागौरी*** थे।

चिश्ती संप्रदाय भारत में खवाजा मुइउद्दीन चिश्ती द्वारा स्थापित किया था। जिनका आगमन भारत में 1192 में हुआ था। उन्होंने अजमेर को अपनी साधना और ज्ञान का केद्र बनाया। चिश्ती संतो का मानना था कि अल्लाह तक पहुँचने का सबसे उपयुक्त माध्यम मनुष्य की सेवा करना था। इसलिए चिश्ती संतों ने अपने ख़ानक़ाह गरीबों की बस्तियों के आस-पास बनाये। गरीबों के बीच रहकर सेवा किया। चिश्ती संप्रदाय में एक और प्रमुख संत हुये शेख हमीउद्दीन और कुतुबद्दीन बख्तियार काकी उनके चेले थे। इन्होंने अपने दरवाजे सभी कमजोर लोगों के लिए उदारता से खोला। इसके बाद निज़ामुद्दीन औलिया ने चिश्ती संप्रदाय को आगे बढ़ाने में प्रमुख योगदान दिया।

सुहरावर्दी सिलसिला इस सिलसिले को शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा शुरू किया गया था लेकिन इस संप्रदाय की भारत में स्थापना बहाउद्दीन जकारिया ने की। यह संप्रदाय भौतिक सुख में विश्वास करता था। इसलिए इस संप्रदाय के संतों ने राज्यों के साथ निकट सम्पर्क बनाये रखा। यहाँ तक इस सम्प्रदाय के लोगों ने उपहार, जागीर भी स्वीकार किये। यह संप्रदाय पंजाब और सिंध में स्थापित हुआ। मुल्तान, सिंध और पंजाब सुहरावर्दी संप्रदाय का मुख्य केन्द्र था। चिश्तियों के विपरीत ये आराम पसन्द व विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे। इस संप्रदाय के लोग राजनैतिक

में भाग लेते थे। वही दिल्ली सल्तनत के शासक इल्तुतमिश ने शेख उल इस्लाम का पद सर्वप्रथम शेख नजमुद्दीन सुगरा को दिया गया था। ये लोग शारीरिक कष्ट सह कर आत्मा और ज्ञान प्राप्ति में विश्वास नहीं करते थे। ये राजकीय पद लालसी थे। ***बहाउद्दीन जकारिया का कहना था कि "धन हृदय में रोग है; परन्तु हाथ में औषधि के समान है।"*** शिहाबुद्दीन सुहरावदों ने अवारिफुल मआरिफ की रचना की।

फिरदौसी सिलसिला की स्थापना शेख बदरूद्दीन समरकन्दी ने 13वीं शताब्दी में की। इसका मुख्य केंद्र बिहार में अधिक प्रसिद्ध था। बिहार में शेख सरफुद्दीन याहिया मुनीरी इसके प्रसिद्ध सन्त थे जो फिरोज तुगलक के समकालीन थे। शेख याहिया मुनीरी ने मक्तूबात (पत्रों) की रचना की जिसमें वहदत- उल-वजूद के सिद्धान्त को इस्लाम के नजदीक लाया गया। यह सिलसिला भी सुहरावदी सिलसिले के सिद्धांतों के नजदीक था। फिरदौसी सिलसिला सुहरावदी सिलसिले से प्रभावित था। कादिरी संप्रदाय की स्थापना शेख अब्दुल कादिर जिलानी ने बगदाद में की थी। भारत में इस सिलसिले की शुरुआत 15वीं सदी में सैय्यद नासिरुद्दीन मुहम्मद जिलानी ने उच्छ (सिन्ध) में की व शाह नियामतउल्ला ने भी योगदान दिया। अकबर ने शेख मूसा को 5000 का मनसब प्रदान किया था। मियाँ मीर जहांगीर एवं शाहजहां के समकालीन थे।

शेख मीर मुहम्मद मियाँ मीर भारत में सबसे प्रसिद्ध संत हुये। मियाँ मीर के शिष्य सिक्ख धर्म प्रमुख गुरु अर्जुन देव थे। अमृतसर में मियाँ मीर ने ही स्वर्ण मंदिर की आधारशिला रखी थी। मियाँ मीर के एक शिष्य मुल्ला शाह बदख्शी थे जिन्होंने ने कादिरी संप्रदाय का प्रचार कश्मीर में किया। मुगल बादशाह शाहजहाँ भी मुल्लाशाह का सम्मान करते थे। शाहजहां का पुत्र दारा शिकोह भी ***कादिरी सिलसिले*** के अनुयायी थे। शाहजहां की पुत्री जहांआरा के मुल्ला शाह आध्यात्मिक गुरु थे। कादिरी सिलसिले का प्रसार उत्तर प्रदेश व दक्षिण में अधिक हुआ। कादिरी संप्रदाय के अन्य लोकप्रिय संत शेख मूसा, शेख दाउद किरमानी और शेख अब्दुल माली कादिरी थे। ***नक्शबंदी सम्प्रदाय*** इसकी स्थापना ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्दी ने बगदाद में और भारत में इस सिलसिले की स्थापना ख्वाजा बाकी बिल्लाह (1563 1603 ई.) ने की। सूफी आंदोलन में यह सबसे कट्टरवादी सिलसिला माना जाता है क्योंकि इस सिलसिले के अनुयायी इन्होंने शरीअत के कानूनों पर बल दिया। इस सिलसिले ने संगीत का भी विरोध किया। इसी सिलसिले का अनुयायी बाबर भी था। इस सिलसिले के सूफी संत सरहिन्दी ने अल्लाह के साथ एकत्व (वहदत-उल-वुजूद) के दर्शन को अस्वीकार कर वहदत-उल-शुहूद (प्रत्यक्षवाद) का दर्शन का सिद्धान्त प्रतिपादित किया सरहिन्दी का मत था कि मनुष्य व ईश्वर का सम्बन्ध दास व मालिक का होता है न कि प्रेमिका व प्रेमी का। ***कलंदरी सम्प्रदाय*** की स्थापना अब्दुल अजीज मक्की ने की थी और भारत में इसका प्रचार नजीमुद्दीन कलंदर ने किया जो औलिया के शिष्य थे। इस संप्रदाय में घुमन्तु फकीर होते थे जो इस्लामी सिद्धांतों को नहीं मानते थे। कलन्दरों का संपर्क नाथ यौगियों से अधिक था इसीलिए कलनदर नाथ योगियों व नागा संन्यासियों के जैसे कान छिद्र करवाते थे।

महत्व

सूफी आन्दोलन ने समाज के नैतिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सूफी संतों ने समाज में फैली कुरीतियों, रुढ़िवादियों, अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया। मनुष्य का अल्लाह से सीधा सम्पर्क स्थापित करने पर जोर दिया। सूफियों और भक्ति संतों के विचारों का आदान-प्रदान भी होता था वें एक दुसरे को अपने ज्ञानवर्धक विचारों से प्रभावित करते थे। यहाँ तक सूफियों और योगियों के मध्य भी ज्ञान का लेन देन हुआ। इसी के चलते हिन्दू हठ योग की पुस्तक अमृत कुंड का अरबी एवं फारसी में अनुवाद हुआ। सूफियों का महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है गरीब, कमजोर,पीड़ित लोगों के बीच रहकर उनकी सेवा करना चाहे वह किसी भी धर्म जाति का हो। सूफी संतों ने अपना सम्पर्क जनता के बीच रहकर बनाये रखा। जनता के सुख-दुःख में सम्मलित होकर उनका अभिन्न हिस्सा बने रहते थे। सूफी संत हिन्दू एवं मुस्लिम के बीच किसी भी तरह का भेदभाव नहीं रखते थे। उनके दरवाजे सभी लोगों के लिए खुले रहते थे। वें हिन्दू और मुसलमानों के साथ एक जैसा व्यवहार करते थे। सूफी आंदोलन भाईचारे और समनाता पर बल देता था। सूफी सिद्धांतों में रूढ़िवादिता के लिए कोई भी जगह नहीं थी। सूफी भी उलेमाओं और मुल्लों की आलोचना करते थे। सूफी संतो ने न केवल समाज सुधार में योगदान दिया बल्कि भारतीय साहित्य और क्षेत्रीय साहित्य के विकास में भी अमूल्य योगदान दिया। सूफी संत अधिकांश अपने उपदेश स्थानीय भाषा में ही देते थे। अक्सर सूफी संत हिंदवी भाषा का प्रयोग अपनी बात को जन साधारण तक पहुँचाने के लिए करते थे। यही कारण है कि बहुत से सूफी ग्रन्थ स्थानीय भाषा में लिखे गए है। जिनमें से प्रमुख रूप से बांग्ला भाषा है। भारत में इस्लाम के आने से बहुत पहले ही दोनों संस्कृतियों के बीच संपर्क शुरू हो गया थे। इस्लाम और हिंदू धर्म के के बीच संघर्ष और तालमेल के साथ आपसी समायोजन की प्रक्रिया के विकास को देखते है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि संतों ने एक दूसरे समूह के सांस्कृतिक अनुयायियों के विचारों के प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब तक दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई तो इस्लामिक धर्म के प्रवासियों ने कट्टर अनुयायी होने का दावा किया और इस्लामिक संस्कारों और प्रार्थनाओं के प्रति सम्मान प्रकट किया। उन्होंने इस्लाम में धर्मांतरण को प्राथमिकता दी कुछ को धर्मांतरण में मजबूर किया गया जबकि कुछ अन्य लोगों को आर्थिक लाभ का लालच दिया गया। प्रारंभिक सूफी मनीषियों ने पश्चाताप, संयम, त्याग, गरीबी और भगवान में विश्वास के गुणों पर जोर दिया। भारतीय संस्कृति पर इस्लाम के सकारात्मक प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था लेकिन आम हिंदुओं और मुसलमानों के बीच बातचीत, सूफी और भक्ति संतों ने एक हिंदुस्तानी संस्कृति के उद्भव के लिए एक वातावरण बनाया प्रारंभिक संदेह, नापसंदगी, वैमनस्यता और घृणा बिल्कुल गायब नहीं हुई लेकिन धीरे-धीरे यह अहसास हुआ कि मुसलमानों और हिंदुओं को एक दूसरे के साथ में रहना पड़ रहा है और भौगोलिक स्थिति को साझा करते हुए उन्हें बदलते हुए परिस्थितियों के साथ सामंजस्य, समायोजन, समायोजन और अनुकूलन करना चाहिए। उनकी पहचान उनके सांस्कृतिक प्रथाओं और प्रतीकों में परिलक्षित होती है। सूफी आंदोलन और भक्ति आंदोलन के संतों के विचारों की हम

तुलना करे तो हम पाते है कि इन दोनों आंदोलन के संतों के विचार कुछ हद तक आपस मिलते-जुलते है जैसे एकेश्ववादी, भौतिक जीवन का त्याग, शांति व अहिंसा का ज्ञान, भाई-चारा, प्रेम, ईश्वर – अल्लाह में लीन हो जाना। इस्लाम और हिन्दू धर्म का प्रचार करना, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, हृदय की पवित्रता पर बल, गुरु एवं शिष्य का महत्व आदि है।

निष्कर्ष

सूफीमत की पवित्रता की बात करें तो उनका मानना था कि ईश्वर एक है सर्वव्यापी है वह जीव-प्राणियों के हृदय में निवास करता है। सूफी संतों का मानना था कि बिना गुरु के ईश्वर और ज्ञान को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ईश्वर के द्वारा ही मायाजाल के बंधन से मुक्ति मिल सकती है। मनुष्य यदि अपने अहंकार पर विजय प्राप्त कर ले तो अल्लाह को प्राप्त कर सकता है। सूफी संतो ने अल्लाह तक पहुँचने के लिए संगीत को माध्यम बनाया। सूफी संतों का कहना था कि संगीत अल्लाह से सीधे जोड़ता है यदि मनुष्य सत्य-अहिंसा में विश्वास करें तो गलत कामों से दूरी बना के रखे एवं अपनी कामवासन, इंद्रियों पर नियंत्रण रखे तो वह अल्लाह के कदमों में स्थान पाने के योग्य हो जाएंगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. *अरब और भारत के संबंध , प्रो नदवी*
2. *श्री बाँके बिहारी लाल, कनाइहाइयालाल , ईरान के सूफी कवि*
3. *पांडे,चन्द्रबली, सूफीमत*
4. *शास्त्री चतुरसेन, भारत के इस्लाम*
5. *चतुर्वेदी, पंडित परशुराम, सूफी काव्य संग्रह*
6. *अहमद, अजीज, (1964),स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन दि इंडियन इनवायरमेण्ट, प्रकाशन, आक्सफोर्ड*
7. *शुस्तरे, ए,ए, (1938), आउटलाइंस आफ इस्लामिक क्ल्चर, भाग 1 और भाग दो , बैंगलोर*
8. *रशीद,ए, (1969), सोसाइटी एंड कल्चर इन मेडिवल इंडिया, कलकत्ता*
9. *अली,अमीर,(1922), द स्पिरिट आफ इस्लाम, कलकत्ता*
10. *सुभान, बिशप,जान,ए, (1907), सूफिज़्म-इट्स सेट्स एंड ग्रोइन्स, लखनऊ*
11. *शेखानी,एच,के, (1968),कल्चर ट्रेडन्स इन इन मेडिवल इंडिया*
12. *क्रेमर्स, जे,एच,(1930),दी लीगेसी आफ़ इस्लाम, अक्सफोर्ड*
13. *चोपड़ा,प्राणनाथ, (1963), सोसाइटी एंड कल्चर ड्यूरिंग द मुगल एज, आगरा*
14. *चौबे, झारखंड,श्रीवास्तव, कन्हैयालाल, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, लखनऊ*
15. *चतुर्वेदी,परशुराम, (2008),उत्तर भारत में संत परंपरा*
16. *पांडे,राम,सृजन, (1995),संतों, की सांस्कृतिक संतुति, दिल्ली*
17. *तिवारी,रामपूजन,(2013), सूफीमत साधना और साहित्य, ज्ञान मण्डल, बनारस*